SECOND TERMINAL EVALUATION 2024 - 25 A

STD. X HINDI Answer key

1. जातिगत समस्या पर
2. धुँधली
3. **पोस्टर**

जातिभेद मिटाओ ... सबको समान मानो ...

जातिप्रथा छोडें ... कोई न ऊँचा ...
समता अपनाएँ ... कोई न नीच ...
जाति न चाहिए ... जातीय असमानता अभिशाप
मानवता चाहिए।

मानवाधिकार दिवस - दिसंबर 10

एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर मानव को
जाति के नाम पर विवेचन मत करो।

- हिंदी मंच, जी एच एस एस, परवूर

4. अकाल के कारण घर की हालत बहुत दयनीय थी। इसलिए छिपकलियाँ भूख मिटाने के लिए कीडों की तलाश में भीत पर गश्त लगा रही थीं।

5. **कवितांश का आशय**

प्रस्तुत पंक्तियाँ हिंदी के प्रमुख कवि **नागार्जुन** की छोटी कविता **अकाल और उसके बाद** से ली गई हैं। इसमें कवि ने **अकाल की भीषणता का** वर्णन किया है।

अकाल के कारण कई दिनों तक घर में दाना नहीं था। खाना पकाने कोई न जलाने से चूल्हा रो रहा था और दाना पीसने कोई उपयोग न करने से चक्की उदास पडी थी। चूल्हा और चक्की के पास घर की कानी कुतिया अनाज आने की प्रतीक्षा में सो रही थी। भूख से तडपती छिपकलियाँ भी कीडों की तलाश में घर की दीवारों पर घूम रही थीं। अकाल में चूहों की हालत भी बहुत बुरी थी। कवितांश के ज़रिए कवि यह बताते हैं कि घर में ग्रस्त अकाल का फल वहाँ के मनुष्यों पर ही नहीं सारे जीव-जंतुओं पर भी पड रहा है। कवितांश की हर पंक्तियों में कई दिनों तक का प्रयोग अकाल की तीव्रता को दिखाने केलिए बार बार किया है।

यहाँ कवि ने अकाल की भीषणता को चित्रित करने में सफल हुए हैं। यह कवितांश बहुत सुंदर और आकर्षक बनी है। कवितांश की भाषा बहुत सरल है। पढने और समझने में भी आसान है।

6. सुबह से
7. इसके लिए वे फूलों की टोकरियों को रात भर पानी से भरी गागरों के ऊपर रखते हैं।
8. **वाक्य पिरामिड**

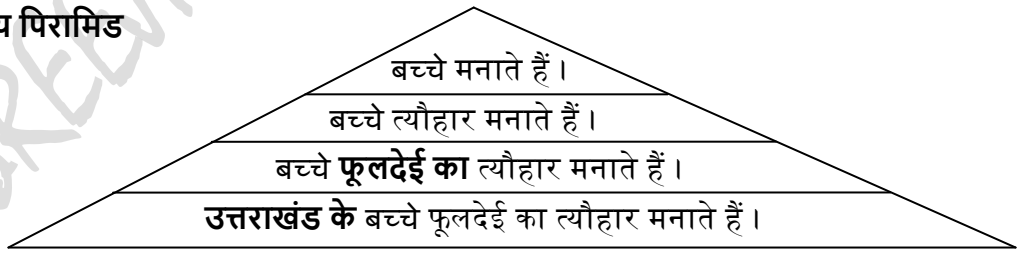

9. **सही मिलान**

बच्चे	फूल चुनते हैं।
बडे लोग	बच्चों को सलाह देते हैं।
औजी	चैती गीत गाते हैं।
पशुचारक	औषधियाँ बेचते हैं।

SREEJITH P, KOVOOR, VARKALA, SCR145

अथवा

फूलदेई के त्यौहार पर टिप्पणी

फूलदेई बसंत ऋतु में उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में मनाये जानेवाले बच्चों का बडा त्यौहार है। इक्कीस दिन के इस त्यौहार में बच्चे सुबह से शाम तक तरह-तरह के फूल चुन लेते हैं। इन फूलों को रिंगाल की टोकरियों में रखकर सुबह तक मुरझा न पाने केलिए रात भर पानी से भरे गागरों के ऊपर रखा जाता है। सुबह होते ही बच्चों की टोलियाँ गाँव भर में घूमती हैं और इन फूलों से घरों की देहरियाँ सजाए जाते हैं। उन घरवाले बच्चों को दक्षिणा के रूप में चावल, गुड, दाल आदि देते हैं। इक्कीस दिन तक इकट्ठी की जाती इन चीज़ों से अंतिम दिन सामूहिक भोज बनाया जाता है। इस त्यौहार से जुडे हुए सारे काम बच्चे ही करते हैं। इस आयोजन में बडों की भूमिका केवल सलाह देने तक सीमित होती है।

10. लज्जित होना
11. माटसाब ने कॉपी जाँचते समय बिना गलती से बेला के बालों में पंजा फँसाया। उसे एक अच्छी लडकी माननेवाले साहिल के सामने ऐसा होने से बेला का मन बहुत खराब हो गया।
12. गीत चतुर्वेदी
13. देखने लगे।
14. **वार्तालाप - माँ और मैनेजर के बीच का**

मैनेजर - जी तुमको क्या हुआ ?
माँ - सर ... मेरी आवाज़ फट रही है।
मैनेजर - लोग चिल्ला रहे हैं। हम क्या करें ?
माँ - माफ कीजिए। मुझसे गाया नहीं जाता।
मैनेजर - मेरे मन में एक उपाय है।
माँ - कौन-सा उपाय ? बताइए।
मैनेजर - हम चार्ली को स्टेज पर भेज देंगे।
माँ - चार्ली को ! वह तो पाँच साल का बच्चा है।
मैनेजर - कुछ दिन पहले मैंने उसका अभिनय देखा था। बहुत अच्छा लगा।
माँ - मुझे डर लगता है। वह इस उग्र भीड को कैसे झेल पाएगा !
मैनेजर - तुम चिंता मत करो। मैं उसे समझा दूँगा कि क्या करना है।
माँ - ठीक है।

अथवा

माँ की डायरी

तारीख : ....

आज का दिन मैं कैसे भूलूँ ? ... दुख और खुशी भरा दिन। मेरा लाडला चार्ली आज शो मैन बन गया। उसका पहला शो हमेशा यादों में रहेगा। लगता है मैं आगे गा नहीं पाऊँगी। गले में खराबी है। गाते समय मेरी आवाज़ को फटते देखकर मैनेजर के साथ वह स्टेज पर गया। मैं बहुत डर गयी थी। लेकिन बेटा चार्ली ने अपनी मासूमियत से गीत गाकर, दर्शकों से बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर सबको खुश कराने लगा। खूब पैसा भी मिला। शैतान, मेरी फटी आवाज़ का भी नकल उतार दी। हे भगवान ! आगे भी मेरा लाडला शो में कमाल करे।

15. लूसी मैडम एक विदेशी टूरिस्ट हैं। वे कलाम को अपने साथ दिल्ली ले जाकर डॉ. कलाम से मिलवाने की वाद देती हैं।
16. **चार सही प्रस्ताव**

(क) कलाम और रणविजय अच्छे दोस्त हैं।
(ग) कलाम चाय की दुकान में काम करता है।
(घ) कलाम सीखने में तेज़ है।
(च) कलाम अपनी दोस्ती का प्रण नहीं तोडता है।

SREEJITH.R, KOVOOR, VARKALA, SCRIPS

अथवा

पत्र - छोटू उर्फ कलाम ने राष्ट्रपति डॉ. कलाम को देने लिखा

स्थान : जैसलमेर
तारीख : 16 मार्च 2005

आदरणीय डॉ. कलाम जी,

सादर प्रणाम। आप कैसे हैं ? मुझे आपसे मिलने का बहुत बडा शौक है। मेरा नाम भी कलाम है, यह नाम किसी ने मुझे नहीं दिया, मैंने स्वयं अपना नाम कलाम रखा। टीवी में आपका भाषण सुनकर मैं आपसे बहुत प्रभावित हुआ। मैं जैसलमेर के एक चाय की दुकान में काम करता हूँ। मेरा सबसे बडा सपना है स्कूल जाना और आप जैसे बनना। घर की गरीबी के कारण मैं स्कूल नहीं जा सकता। दिल्ली पहुँचकर आपसे मिलना मेरी सबसे बडी अभिलाषा है। जानता हूँ आप भारत के राष्ट्रपति हैं, विभिन्न मामलों में व्यस्त होंगे। फिर भी एक बार मुझे आपसे मिलने की अनुमति देने की कृपा करें।

आपका आज्ञाकारी छात्र
[हस्ताक्षर]
कलाम (छोटू)

सेवा में,
डॉ. अब्दुल कलाम
राष्ट्रपति
दिल्ली

17. ये

18. **पटकथा**

<u>सीन नंबर - 3</u>

स्थान - ठाकुर के कुएँ के पास।
समय - रात को 9 बजे।
पात्र - दो स्त्रियाँ, दोनों लगभग 40 साल की, साडी पहनी हैं।
दृश्य का विवरण - दो स्त्रियाँ पानी भरने कुएँ की ओर आ रही हैं। दोनों बातें कर रही हैं। रात का समय है। ठाकुर के दरवाज़े से कुप्पी की धुँधली रोशनी आ रही है।

संवाद

स्त्री एक - देखो दीदी, ये मर्द लोग कितने बुरे हैं!
स्त्री दो - सच। हम लोग आराम से बैठे देखकर उन्हें जलन होती है।
स्त्री एक - कभी भी एक घडा पानी न भर लाते। सिर्फ हुक्म चलाते हैं।
स्त्री दो - हाँ, उनकेलिए हम लौंडियाँ जैसी हैं, रोटी-कपडे देते हैं न ?
स्त्री एक - इतना काम किसी दूसरे घर कर देती तो यहाँ से ज़्यादा आराम मिलेगा।
स्त्री दो - यहाँ दिन-रात मेहनत करने पर भी किसीका मुँह ही सीधा नहीं होता।
स्त्री एक - अरे, तुम दुखी हो मत। हमारा ज़माना ज़रूर आएगा। अब जल्दी पानी भर लो। वे हमें बुला रहे होंगे।
स्त्री दो - ठीक है दीदी।

(स्त्रियाँ पानी भरकर जाती हैं।)

दृश्य समाप्त